A TRAINING PROGRAMME ON "ECO-RESTORATION OF DEGRADED AREAS" ORGANIZED BY THE HFRI, SHIMLA FROM 14TH TO 16TH MARCH, 2018

A training on "**Eco-restoration of Degraded Areas"** was organized at the Himalayan Forest Research Institute, Shimla from 14th to 16th March, 2018. Eighteen participants representing the Himachal Pradesh Forest Department, Rural Development Department and Representatives of Gram Panchayats of Shimla and Kinnaur districts attended this training programme which was, aimed at sensitization and awareness generation amongst the various stakeholders about the problem of degraded areas and their Eco-restoration techniques.

Dr. V.P. Tewari, Director of the Institute inaugurated the training programme on 14th March, 2018. Addressing the participants, he explicitly highlighted the intent behind this training programme. Dr. Tewari said that as per the latest estimates, the country has 120.4 million ha of degraded areas and accordingly Eco-restoration of Degraded area holds the key for productivity enhancement through eco-restoration practices. Hence, efforts needs to be directed for developing suitable technologies for resource conservation and management of the degraded and wasteland and transferring the knowledge to the end users. The scientifically sound afforestation technologies assume immense significance to put these lands for productive use.

He further informed that the institute is working in tune with the National mandate and as per the present day requirements of the general public. In line with the above, this three days training-cum-demonstration programme for the personnel of State Forest Department, Rural Development Department and Representatives of Gram Panchayat Shimla and Kinnaur district will benefit the departments so that they can find ways and the means to orient the process of the policy formulation in this direction and the cause of the humanity can be suitably addressed. He also reiterated the need of transforming the Lab research to the land and common masses.

Dr. R.K. Verma, Coordinator of the training programme informed the participants that during the programme different resource persons and experts will apprise and provide in depth knowledge about the land resources and management & mitigation techniques employed for eco-restoration of degraded areas, apart from the excursion visit to Western Himalayan Temperate Arboretum of the Institute at Potter's Hills and Model Nursery, Baragaon. Dr. Verma also provided detailed information about the work done by the institute with respect to nursery and plantation techniques for

eco-rehabilitation of limestone mined areas and other degraded areas of Shiwalik Hills. He also elaborated upon trees and shrubs species suitable for eco-rehabilitation of degraded areas of different zones of Himachal Pradesh.

The resource persons Dr. Sandeep Sharma, Dr. Rajesh Sharma, Sh. P.S. Negi, Dr. Vaneet Jishtu and Sh. Sanjeev Thakur shared the technical knowhow and scientific knowledge about the multiple aspects of

the degraded areas and remedial measures for ecorestoration of such degraded lands. The in-house interaction session with the participants covered the issues under the ambit of nursery preparation of prominent and potential bio-engineering plant species, landscaping of the degraded sites with the local shrub species, Plantation techniques of multipurpose tree like Paulowania and management and control of the different insect-pests of nursery and plantation. The wide spectrum of medicinal plants with reference to Himachal Pradesh was specially dwelled upon by the resource persons. The heterogenous group of the trainees showed very keen interest in the interactions and clarified their doubts by putting queries.

On the second day, the participants were taken on a field trip to **Western Himalayan Temperate Arboretum**, a venture of the institute at Potter's Hill, Shimla. This outdoor visit was envisaged to provide the participants a tangible and thrilling touch with the nature. All the participants were delighted with this visit and expressed that this sort of realistic interaction with the nature is more concrete and everlasting.

On the last day of the training, Dr. K.S. Kapoor, Dr. Ashwani Tapwal, Dr. Swaran Lata and Dr. Joginder

Chauhan from HFRI, Shimla gave elaborate and illustrative presentations on multiple aspects on **Eco-restoration of Degraded Areas.** After that the participants visited the different laboratories and Herbarium of the institutes where useful information about the Ultra Modern Scientific Equipments were given by the concerned Laboratory Incharge.

During the plenary session of the programme, Dr. V.P. Tewari, Director of the Institute shared his views with the participants once again and thanked all the participants for giving their valuable time and

making this programme successful. He opined that the issue of the wastelands is so vast and comprehensive that a three day's programme cannot address all the aspects, but it must have started the thought provoking process in tackling the problem of wastelands. He also distributed the certificates of participation to all the participants. At the end of the closing session of the training, Dr. K.S. Kapoor, Group Coordinator of the institute thanked all the participants for sparing their valuable time to participate in the training programme.

A feedback form was also filled up by the participants of the training programme which provided the valuable and important suggestions in futuristic research training programmes. All the participants opined the worth of this training programme and admired the efforts of the organizers for providing awareness about a very relevant and useful topic.

PRINT MEDIA COVERAGE

पंजाब केसरी मार्च 15, 2018

कार्यशाला का आयोजन

शिमला, 14 मार्च (ब्यूरो): हिमालय वन अनुसंधान संस्थान शिमला में अपक्षीण क्षेत्रों की पारिस्थितिक पुन: स्थापना विषय पर 3 दिवसीय कार्यशाला बुधवार को शुरू हुई।

इसमें विभिन्न विभागों के अधिकारियों के अलावा शिमला और किन्नौर जिला के पंचायत प्रतिनिधियों ने भाग लिया। कार्यशाला का शुभारंभ करते हुए संस्थान के निदेशक डा. वी.पी. तिवारी ने कहा कि देश में 23 प्रतिशत भाग पर आच्छादित वन संपदा अपने अंदर कई मूल्यों को समाहित किए हुए है। उन्होंने कहा कि वन संपदा के अंदर आजीविका चलाने व गरीबी उन्मूलन की अद्भुत क्षमता है। इसके लिए संस्थान समय-समय पर इस तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता रहता है।

दैनिक भास्कर मार्च 15, 2018

एचएफआरआई में तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर शुरू

शिमला | हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला की ओर से बुधवार को संस्थान में अपक्षीण क्षेत्रों की पारिस्थितिक पुरःस्थापना विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। संस्थान के निदेशक डॉ. वीपी तिवारी ने प्रतिभागियों से आह्वान करते हुए कहा कि निश्चित रूप से यह प्रशिक्षण कार्यक्रम आधारभूत, मौलिक एवं नवीनतम जानकारी उपलब्ध करवाने में मील का पत्थर साबित होगा। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में लगभग 18 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया जो कि हिमाचल प्रदेश सरकार के प्रमुख विभागों जैसे वन विभाग, ग्रामीण विकास व जिला किन्नौर व शिमला के ग्राम पंचायतों के प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं। उन्होंने कहा कि देश के लगभग 23 प्रतिशत भाग पर आच्छादित वन संपदा अपने अंदर कई मूल्यों को समाहित किए हुए हैं।

अजीत समाचार मार्च 15, 2018

तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

शिमला, 14 मार्च (अ.स.) : हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा 14 मार्च से 16 मार्च, 2018 तक अपक्षीण क्षेत्रों की पारिस्थितिक पुनः स्थापना विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। जिसका शुभारम्भ, डा. वीपी तिवारी, निदेशक हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में लगभग 18 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया, जो कि हिमाचल प्रदेश सरकार के प्रमुख विभागों जैसे वन विभाग, ग्रामीण विकास तथा ज़िला किन्नौर व शिमला के ग्राम पंचायतों के प्रतिनिधि थे। उल्लेखनीय है कि इस संस्थान द्वारा समय-समय पर पर्यावरण से जुड़े अहम मुद्दों पर कार्यशालाएं एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इसी श्रृंखला के अंतर्गत अपक्षीण क्षेत्रों की पारिस्थितिक पुनः स्थापना प्रशिक्षण कार्यक्रम धरातल स्तर पर जागरूकता, वैज्ञानिक एवं तकनीकी जानकारी

डा. वीपी तिवारी ने किया कार्यक्रम का शुभारम्भ

उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए संस्थान के निदेशक डा. वीपी तिवारी ने सभी प्रतिभागियों का हार्दिक अभिनन्दन व्यक्त किया तथा इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के संबंधित मन्तवय को स्पष्ट किया। उन्होंने प्रतिभागियों का आह्वान करते हुए कहा कि निश्चित रूप से यह प्रशिक्षण कार्यक्रम आधारभूत, मौलिक एवं नवीनतम जानकारी उपलब्ध करवाने व सम्प्रेषणा उत्पन्न करने में मील का पत्थर साबित होगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम के पाठ्यक्रम निदेशक डा. आरके वर्मा ने कहा कि उपलब्ध भूमि संसाधनों पर लगातार बढ़ती जनसंख्या के कारण अत्याधिक दबाव है तथा भोजन, ईंधन, चारे व रेशों की मांग भी बढ़ रही है। इस परिदृश्य में किसी भी प्रकार की बेकार या बंजर भूमि पर हरित आवरण स्थापित करना समय की पूरजोर मांग है। उन्होंने संस्थान द्वारा ज़िला सिरमौर के पांवटा साहिब व ज़िला सोलन के दाड़लाघाट में स्थित कश्लोग सीमेंट द्वारा जनित अपक्षीत भूमि पर पौध रोपण द्वारा किए गए पुनः स्थापन कार्य व इस कार्य में उपयोगी व कारगर सिद्ध हुई पौध प्रजातियों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी उपलब्ध करवाई।

दिव्य हिमाचल मार्च 15, 2018

पारिस्थितिक पुनर्स्थापना पर प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

■ दिव्य हिमाचल ब्यूरो, शिमला

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा बुधवार से 'अपक्षीण क्षेत्रों की पारिस्थितिक पुनर्स्थापना' विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया गया। यह 16 मार्च को संपन्न होगा। बुधवार को इस कार्यक्रम का शुभारंभ डा. वीपी तिवारी निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में लगभग 18 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया, जिनमें विभिन्न विभागों वन विभाग, ग्रामीण विकास तथा जिला किन्नौर व शिमला के ग्राम पंचायतों के प्रतिनिधि थे। संस्थान के निदेशक डा. वीपी तिवारी ने कहा कि वास्तव में देश के लगभग 23 प्रतिशत भाग पर आच्छादित वन संपदा अपने अंदर कई मूल्यों को समाहित किए हुए है। वन संपदा के अंदर आजीविका चलाने व गरीबी उन्मूलन की अदभुत क्षमता है। इसके अलावा चारागाह भूमि तथा अपक्षीण क्षेत्र जैसे अन्य स्रोत भी वन संपदा में ही निहित हैं। कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में डा. केएस कपूर, समूह समन्वयक एवं कार्यालयाध्यक्ष एसपी नेगी भी उपस्थित थे। प्रशिक्षण कार्यक्रम समन्वयक डा. आरके वर्मा ने कहा कि प्रशिक्षणार्थियों को संस्थान की वनस्पति वाटिका, पॉटरहिल, समरहिल शिमला एवं संस्थान की मॉडल नर्सरी बड़ागांव का भ्रमण भी करवाया जाएगा।